

(काजी नज्जाल इ-लाम की बंगला कविता
का स्वतंत्र रचना)

मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !
मैं अहित शान्ति का नाश, चाकर मैं उन्निहय;
मैं राजकामी, चिन्मयी सज्जगी !
मैं महाविश्व के महाकाश का वक्ष लेझ,
मैं यदि शशि गुह उपगुह वीरे नक्षत्र छोड़,
मैं महलोक, स्वलोक, मंद शतकोटि लोक,
पहुँचा अलोक के लोक, तब तो जगत् को शक्ति
काला तशोक ;
मैं वसुन्धरा का उविदार
मैं चिन्मयी विजय निकल उत्तम तेजमत्त,
हैं अग्नि शिखरों का पहनाया जिसे हृदय ने नष्ट,
मैं चिन्मयी गवैन्त शशि, हूँ नत शशि जिसे
उज्ज्वल हिमाचल छूँगी थी ।
मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !

मैं दुर्विनीत, दुर्दम, दृश्यान्त,
मैं महापुलक का मूज्यमान, नयान, दिग्गज,
मैं पृथ्वी का अधिशरण, महाध्वंस,
विश्व का महात्रास,
मैं अन्तिम, मैं उच्छिन्न,
बाह्य नूरों का लण,
सृष्टि पर एक ग्रास,
चाणूरों से मोड़ि निमग्न तब उच्छिन्न ।

ॐ महाकाल,
ॐ शम्भुनाथ, की वरिष्ठ जलद-गजनि अम्बाल,
ॐ उपलवण्डवाहिनी जो शतवज्रो-भूषित
उलका भूषित लम्बी।
ॐ बिड़ोही, ॐ जिह्वा अम्बी!

ॐ माटिति ॐ ॐ मंमन्,
ॐ विष्णु विनिर्मित जडकोन,
ॐ उग्र दयाता महाभयु का पंजरा!
ॐ उग्रत उन्नत मुक्त वृंङ,
लोलाल नाचता नई लाल जो महानन्द,
ॐ व्यापार, हम्बी, भीहि-दोल-दोल,
अंदोलित कोल लाग, दुश्चर तंग-रील;
ॐ अग्निनयन अनिर्दिष्ट अक्षर-मोक्षदीप्त
अम्बुजीराज ॐ विन्दुती!
ॐ बिड़ोही, ॐ जिह्वा अम्बी!

ॐ दुर्द्धि दैत्य निगला
ॐ जगत्शक्ति से भूषित हा दन व्याला;
ॐ होमशाला ॐ नामदग्ध जगदग्नि,
ॐ डोडश, ॐ छट्पदश, ॐ अग्नि
ॐ निबिड़ दूर्यशरित लगाहीन निरन्तर,
कालीकाजालिकवक अम्बालगदगु सेवित
हाथिलाल चित्तधूता जमान।
ॐ इंद्राजीपुत्र, चंद्रद्यौ, माल ॐ दूर्य,
ॐ एक हाथ बाँसुरी, दूसरे ॐ बीजा (जगत्पुत्र)
ॐ नीलकण्ठ, जो महाविष्णु का गालजाल,
ॐ लागस्क धूर्जटी अम्बाल,
ॐ उग्र जराज ॐ जेनोचरल
ॐ जग की भाग्यजगत्पुत्र।
ॐ अम्बुजाल - निर्मित पिताक, ॐ माणिक,
ॐ की बिड़ोही का अक्षय भूषी ती!
ॐ बिड़ोही, ॐ जिह्वा अम्बी!

(बाली नदाल इ-लाम की बंगला कविता
का स्वतंत्र रूपान्तर)

मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !
मैं अहित शान्ति का नाश, चाकर मैं उन्निहप;
मैं एकामी, चिन्मयी सजगदी !
मैं महाविश्व के महाकाश का वक्ष लेऊ,
मैं यदि शशिगुह उपगुह वीरे नक्षत्र छोड़,
मैं महलोक स्वलोक मंदशतकोटि लोक,
पहुँचा अलोक के लोक, नष्टा जगत् को शंकित
काला नशोक ;
मैं वसुन्धरा का उविदार
मैं चिन्मयी विकला उत्तम लेखमत्त,
हैं अहित शिखरों का पहनाया जिसे हृदय ने कष्ट,
मैं चिन्मयी गवैन्त शशि, हृदय नतशशि जिसे
उत्तुङ्ग हिमाचल छुंगे थी ।
मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !

मैं दुर्विनीत, दुर्दम, दृशंस,
मैं महापुलक का मूत्रधारा, नयन, दिग्ग,
मैं पृथ्वी का अभिशप, महाध्वंस,
विश्व का महात्रास,
मैं अनिष्टम, मैं उच्छिन्न,
बाह्य नुर्यो का लण,
स्टिष्ट पद एक ग्रास,
चाणसे मेरे छिन्न निधन तब छिन्न ।

ॐ महाकाल,
ॐ शम्भुनाथ, श्री वासुदेव जलद-गजनि बभाल,
ॐ उपलवण्डवाहिनी जो शतवज्रो-भूषित
उलका भूषित लकी।
ॐ बिरोधी, ॐ जिह्वा अम्भी!

ॐ माटिति ॐ ॐ मंभा,
ॐ विष्णु विनिर्मित जइ कोन,
ॐ उग्र दयाता महाभयु का पंजा!
ॐ उग्र त उन्नद मुक्त ब्रुंड,
सोल्लास नाचत नई लाल पौ महाभन्द,
ॐ श्यामवर, हम्भी, भीहि-दोल-दोल,
अंदोलित कोल लागू, दुष्ट मंग-री लडू
ॐ अग्निनयन अनिमेष अक्षर मंगलदीप्त
अमृतप्रीत ॐ सिन्धुती!
ॐ बिरोधी, ॐ जिह्वा अम्भी!

ॐ दुर्द्धि दैत्य निगला
ॐ जगशक्ति से भूषित हा कम ज्वाला;
ॐ होमशिला ॐ जगदग्न्य जगदग्नि,
ॐ जोडश, ॐ लडुमश, ॐ अग्नि
ॐ बिबिड दूर्ध्व शक्ति लगादीन निर्भयमान,
कालीकाजालिकक अंगलंगरु सेवित
हाथिगत जितायुता ममान।
ॐ इंडाणी पुत, चंद्र हाथ, माल ॐ दूर्ध्व,
ॐ एक हाथ बांसुरी, दूसरे ॐ बीजा (जगज्ज्योति)
ॐ नीलकण्ठ, श्री महासिन्धु का गालवान,
ॐ लागस्क धूर्जटी अचल,
ॐ उग्र जटावट ॐ जेनोचरल
ॐ उग्र की भाग्य कुवहमान।
ॐ अहिवाण्ड - निर्मित पिताक, ॐ माणिक,
ॐ की किसीटी का अक्षय पूणी ती!
ॐ बिरोधी, ॐ जिह्वा अम्भी!

(काजी नवाब इ-लाम की बंगला कविता
का स्वतंत्र प्रकाशन)

मैं विद्रोही, मैं चिन्तक अमीर !
मैं अहिंसक शक्ति का नाश, चाकर मैं ठांठिहर;
मैं राजाजी, चिन्तक सज्जन !
मैं महाविश्व के महापुरुष का वध लेइ,
मैं यदि शशिगुह उपगुह पीछे नक्षत्र छोड़,
मैं महलोक स्वलोक मंदशतकोटि लोक,
पहुँचा अलोक के लोक, तब तो जगत् को शक्ति
काला निशेक ;
मैं वसुन्धरा का उविदार
मैं चिन्तक विजय निकलता उसमें निचमत्त,
हैं अहिंसक शक्ति का पहनाया जिसे हृदय ने कष्ट,
मैं चिन्तक गवैन्त शशि, हर नतशशि जिसे
उत्तुङ्ग हिमाचल छुँगा भी ।
मैं विद्रोही, मैं चिन्तक अमीर !

मैं दुर्विनीत, दुर्दम, दृष्टांत,
मैं महापुरुष का भूयन्मा, नराज, किंकर,
मैं पृथ्वी का अधिशक्त, महाध्वंस,
विश्व का महात्रास,
मैं अनिष्टम, मैं उच्छिन्न,
बगुह नुर्यो का लण,
स्ट्रिड पद एक गास,
चापों से मोड़ि निमग्न तब शूल ।

ॐ महाकाल,
ॐ शम्भुनाथ, की वरिष्ठ जलद-गजनि इकाल,
ॐ उपलवण्डवाहिनी को शतवज्रो-भूषित
उलका भूषित लकी।
ॐ बिरोधी, मैं हूँ अमी!

ॐ माटिनि अमी मैं भंभा,
ॐ विष्णु विनिर्मित जडकोन,
ॐ ३२ दशता महाभय का पंजा!
ॐ ३५ त उन्मद मुक्त बंड,
लोल्लास नाचत नई लाल पौ महाभय,
ॐ बापावर, हामी, अमी हिन्दोल-कोन,
आंदोलित कोन लाल, सुख सांग-री लड
ॐ अग्निनयन अनिमेष अक्षर प्रणयनी,
असुरा राज मैं विन्दुती!
ॐ बिरोधी, मैं हूँ अमी!

ॐ दुर्द्धर दैत्य निगल
ॐ जगत्शक्ति से भूषित हा कम ज्योती;
ॐ होमशिला मैं जगदग्न्य जगदग्नि,
ॐ जोडश, मैं हनुमश, मैं अग्नि
ॐ बिबिड बुर्य शक्ति लगादीन निरभयमान,
कालीकाजालिकवक अगल गदगद सेवित
राक्षसाक्त जितायुता ममान।
ॐ इंडाजीपुत चंद्रद्योत, माल मैं बुर्य,
ॐ एक हाथ बाँसुरी, दूसरे मैं बीजा जगत्शक्ति,
ॐ नीलकण्ठ, की महाविष्णु का गालवाल,
ॐ लागस्क भूजर्जरी अचल,
ॐ घट जटावर मैं जेनोदधर
ॐ जग की भाग्य जगत्मान।
ॐ अक्षयवर्ण - निर्मित पिताक, मैं माणिक,
ॐ की किसीटी का अक्षय पूषी ती!
ॐ बिरोधी, मैं हूँ अमी!

(काजी नज्जाल इ-लाम की अंगल कविता
का स्वतंत्र रूपान्तर)

मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !
मैं अहित शान्ति का नाश, चाप मैं उन्मिष्ट;
मैं राजासी, चिन्मयी सज्जकी !
मैं महाविश्व के महाकाश का वक्ष मंड,
मैं यदि शशि गुह्य उपगुह्य वीरे नक्षत्र छोड़,
मैं महलोक, चलो लोक मंद शतकोटि लोक,
पहुँचा अलोक के लोक, तब तो उम्र को शक्ति
कोला नशेक ;
मैं वसुन्धरा का उविदार
मैं चिन्मयी विकल उत्तम सेचमत्तम्,
हैं अहित शिखरों का पहनाया जिसे हृदय ने कष्टम् !
मैं चिन्मयी गवैन्त शशि, हृदय नत शशि जिसे
उत्तुङ्ग हिमाचल छुंग रही ।
मैं विद्रोही, मैं चिन्मयी !

मैं दुर्विनीत, दुर्द्धम, दृशंस,
मैं महापुलक का मुख्यका, नयान, दिग्ग,
मैं पृथ्वी का अधिशेष, महाध्वंस,
विश्व का महात्रास,
मैं अनिष्टम, मैं उच्छिन्न,
बाह्य सूर्य का लण,
सृष्टि पर एक ग्रास,
चाणूर से मोड़ि निमग्न तब शूल ।

ॐ महाकाल,
ॐ अश्वमेध, की वरिष्ठ जलद-गजनि अकाल,
ॐ उपलवण्डवाहिनी को शतवज्रो-पूजित
उलका उदित लमी।
ॐ विद्रोही, मैं हूँ अमी!

ॐ माटिनि अमी मैं मंमन्,
ॐ विष्णु विनिर्मित जडकोन,
ॐ उग्र दधोता महापुरु का पंजा!
ॐ उग्र त उन्मद मुक्त अंड,
लोलात नाचत नई ताल पा महानन्द,
ॐ क्षपाकर, हामी, अमी हिन्दोल-दोल,
अंदोलित कोल लाग, सुख संग-रोल;
ॐ अग्निनयन अनिमेष अक्षर मंजरी
अमुरी रात मैं सिन्धुती!
ॐ विद्रोही, मैं हूँ अमी!

ॐ दुर्द्धि दैत्य निाला
ॐ जगशक्ति से पूजित हा कम ज्वाला;
ॐ होमशाला मैं जगदग्न्य जगदग्नि,
ॐ उग्रोदर, मैं उग्रुदर, मैं अग्नि
ॐ निजिड दूर्य शक्ति लगाहीन निरन्तर,
कालीकाजालिककक अगल गदगद सेवित
हाथिराक्त चित्तधूसर ममान।
ॐ इंद्राणीपुत्र, चंद्रदोष, माल मैं दूर्य,
ॐ एक हाथ बांसुरी, दूसरे मैं बीजा (जगज्ज्य)
ॐ नीलकण्ठ, की महासिन्धु का गालफाल,
ॐ लागस्क धूर्जटी अचल,
ॐ उग्र जटावृद्ध मैं जेनोचकल
ॐ उग्र की आग उग्रजन।
ॐ अग्निपुत्र - निर्मित पिताक, मैं माणिक,
ॐ की किसी का अक्षय पूणी ती!
ॐ विद्रोही, मैं हूँ अमी!

मैं बंदूक, लाला जी, चंगेरा जार,
 मैं गली में रहने को छोड़ दूँ तो देता बहुत धन,
 देखा था बजाता मैं त्रिपाण, एक सौ सौ;
 दिन दिन इसमें मैं जोमके शर्का, जलपकोलको दूँ;
 मैं गमकियुक्त की लड़के, लख दुर्गाको दूँ, जहाज पर,
 मैं विश्वविद्यालयी महाभास, द्वादश (विद्यार्थी) राहुता;
 लांछित के उल में जुलगरही 'बिलज्वाला' मैं अपनात रात,
 मैं सागर मैं बाइर उल्लस, वन में दारवाले धुपमान,
 मैं मुक्त कुमारी को 'देवी' मैं जयत (पुष्प) पुलकितशरी,
 उद्धारन वातना अफिर-जादू मैं प्रौवन की लिप्सा अक्षी,
 विद्यवा के उल 'की काल हूँ' मैं भूत पथिक जग से निरासे,
 मैं धिा अग्रविदित अकांक्षा, मैं धिा उत्तम, मैं धिा उदास;
 मैं दिन-दुर्गा-नीध-ध, अंधा, मैं अंबुद-लुगलाग,
 मैं शुष्क लहारा अंतर्दीन, मैं ज्येष्ठ कास, जलता निदाया,
 मैं क्षिपी प्रिया की मैं नैन-सैन, अंकन-किंकित, नूपुर-छनकुन,
 मैं मुम्बत नद, दृढ़ अलिंगन, लस मैं, सीसा मैं, लृजक नग।
 अकाश मैं जाताल अचेतन मैं चेतन मैं धिा अचल।
 मैं विराय-वैजयंती जगतकी मैं जग-लंकिन की अक्षर,
 उच्चैः श्रवा वा काती वा गगन-पथ जेदी अक्षरालावा,
 काती के उल मैं अरिनयं, मैं भूमिकंप यक्षि-निनाद,
 का अवीर नग, लीलता नारि नारीना मैं उलपोन्माद।
 मैं देवदूत के अरिनयं धिा, वासुकि केन वा कानति,
 लींयत जगद्ग्रात्री का अंगल, पुष्ट पृष्ठजति दुःशामन।
 मैं क्षिप्र मुष्ट काली काल, मैं लमलंगिनी लवीनाश,
 मैं रौरव की ज्वालाओं मैं दस्तान वसंत का फुलभास,
 बलाघ एत मैं पारुषाण, मैं जग सुपथि, लल, कुंभ।
 निष्कप कोहल सिद्ध उदा, कलुषित धाणी को अका।

मैं विद्रोही मैं राणसांत,
 होमी उल्लोका तमी सांत,
 अकाश मैं वातात मैं न मैं जेग तक्ष
 जब अतमादयो की न बदेगी तमाक्षि मैं अक्षिमातन,
 मैं विद्रोही नृपु विश्वक्ष मैं मैं नृप निज जगसिद्ध,
 कल्पनापूर्ति मैं लिये शायरी काता को का क्षिप्र-
 लंका निकाल मैं अनाचार, दुष्ट दुर्विचार, निवृत्ति।

